



GDP से परे आर्थिक अंतरदृष्टि: ICOR

प्रलिम्स के लिये:

[सकल घरेलू उत्पाद \(GDP\)](#), वृद्धिशील पूंजी उत्पादन अनुपात, हैरोड-डोमर मॉडल, [एकीकृत भुगतान इंटरफेस \(UPI\)](#), भारतीय राष्ट्रीय भुगतान नगिम, [मुद्रास्फीति](#), [अनौपचारिक क्षेत्र](#)

मेन्स के लिये:

भारत में ICOR में गिरावट के कारक, आर्थिक संकेतक के रूप में ICOR का उपयोग करने की सीमाएँ

[स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स](#)

चर्चा में क्यों?

भारत का नवीनतम [सकल घरेलू उत्पाद \(GDP\)](#) डेटा, वर्ष 2023 की अप्रैल से जून तमिही के दौरान 7.8% की उल्लेखनीय वृद्धि के साथ सुखियों में है, जसिने विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी स्थिति मज़बूत कर ली है।

- हालाँकि भारत का आर्थिक विवरण संख्यात्मक आँकड़ों से कहीं अधिक वसितृत है। [वृद्धिशील पूंजी आउटपुट अनुपात \(Incremental Capital Output Ratio-ICOR\)](#) में भी प्रगति हुई है, जो पूंजी दक्षता और संसाधन आवंटन के संदर्भ में अंतरदृष्टि प्रदान करता है।

GDP और ICOR:

- GDP आर्थिक प्रदर्शन और विकास के सबसे व्यापक रूप से उपयोग किये जाने वाले संकेतकों में से एक है। यह किसी नश्चिति समयावधि में किसी देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य का मापन है।
 - हालाँकि GDP की अपनी खूबियाँ हैं, लेकिन यह आर्थिक कल्याण का संपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करती है। यह दक्षता, आय वितरण और संस्थागत गुणवत्ता जैसे कारकों की अनदेखी करती है, जो [सतत विकास](#) के लिये आवश्यक हैं।
 - नविश बढ़ाने से सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि हो सकती है, लेकिन वास्तविक [सतत विकास उत्पादकता में वृद्धि पर निर्भर करता है।](#)
 - इसलिये अर्थशास्त्री और नीति निर्माता प्रायः आर्थिक विकास की दक्षता, स्थिरता एवं गुणवत्ता का आकलन करने के लिये अन्य पूरक संकेतकों का उपयोग करते हैं।
- ऐसा ही एक संकेतक ICOR है; यह हैरोड-डोमर ग्रोथ थ्योरी से विकसित हुआ है और नए नविश एवं आर्थिक विकास के बीच संबंधों की जाँच करता है, यह दर्शाता है कि 1% अधिक उत्पादन के लिये कतिनी अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता है।
 - कम ICOR पूंजी की अधिक दक्षता और उत्पादक उपयोग का प्रतीक है।
 - SBI की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बचत और नविश में बढ़ोतरी का रुझान देखा जा रहा है, जसिके साथ-साथ ICOR में भी कमी आ रही है।
 - भारत में वर्तमान ICOR- 4.4 है, जो पूंजी के कुशल उपयोग का संकेत देता है।

नोट: अर्थशास्त्री रॉय हैरोड और एवसी डोमर द्वारा बनाया गया हैरोड-डोमर मॉडल दावा करता है कि आर्थिक विकास नविश के लिये पूंजी की उपलब्धता पर निर्भर करता है और पूंजी संचय की दर सीधे बचत की दर से जुड़ी होती है।

भारत में ICOR में गिरावट के कारण:

- आर्थिक और तकनीकी नवाचार: भारत [लागत-सचेत नवाचार](#) का केंद्र रहा है, जहाँ कंपनियाँ [लागत प्रभावी समाधान](#) विकसित करती हैं जिनके लिये न्यूनतम पूंजी नविश और न्यूनतम टूट-फूट प्रतिस्थापन की आवश्यकता होती है।
 - उदाहरण के लिये [टाटा मोटर्स](#) जैसी कंपनियों ने नैनो कार विकसित की, जो [मध्यम वर्ग की आबादी](#) के लिये एक कम लागत वाला विकल्प है, यह दर्शाता है कि कैसे मतिव्ययी नवाचार से ICOR कम हो सकता है।

- **आर्थिक विविधीकरण:** भारत का अधिक सेवा-उन्मुख और प्रौद्योगिकी-गहन अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव आर्थिक गतिविधियों की पूंजी तीव्रता को कम करता है।
 - IT और सॉफ्टवेयर विकास जैसी सेवाओं के लिये आमतौर पर पारंपरिक विनियमन की तुलना में आउटपुट की प्रति यूनिट कम पूंजी की आवश्यकता होती है।
 - **नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI)** द्वारा विकसित **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI)** एक लागत प्रभावी और कुशल डिजिटल भुगतान प्रणाली बन गई है जिसने वित्तीय समावेशन को गति दी है तथा व्यापक आबादी के लिये लेन-देन को अधिक सुलभ बना दिया है।
 - हालाँकि सावधानी बरतना और विनियमन क्षेत्र को बढ़ावा देकर संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक है।
- **विकेंद्रीकृत विनियमन:** 3D प्रटिगि और अन्य प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके विकेंद्रीकृत एवं वितरित विनियमन के बढ़ने से केंद्रीकृत कारखानों तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन सुविधाओं में भारी पूंजी नविश की आवश्यकता कम हो जाती है।
 - भारत के पहले 3D-प्रटिड डाकघर का उद्घाटन बंगलूरु में किया गया है।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग इंटीग्रेशन:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग (ML) विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता एवं उत्पादकता बढ़ाकर भारत में ICOR को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।
 - उदाहरण के लिये स्वास्थ्य सेवा में AI-संचालित डायग्नोस्टिक्स महँगे उपकरणों पर निर्भरता को कम करता है, जिससे स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का ICOR कम होता है।
 - विनियमन में ML-आधारित पूर्वानुमानित रखरखाव डाउनटाइम को कम करता है और मशीनरी के जीवन को बढ़ाता है, जिससे बार-बार पूंजी प्रतिस्थापन की आवश्यकता कम हो जाती है।
 - इसके अलावा कृषि में AI-सक्षम **परिशुद्ध खेती** संसाधनों के उपयोग को बढ़ाती है, जिसके परिणामस्वरूप कम पूंजीगत व्यय के साथ अधिक फसल की पैदावार होती है।

आर्थिक संकेतक के रूप में ICOR के उपयोग की सीमाएँ:

- **अनौपचारिक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:** भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था विशाल और गतिशील है, लेकिन यह काफी हद तक औपचारिक डेटा संग्रह के दायरे से बाहर संचालित होती है।
 - अनौपचारिक क्षेत्र की औपचारिक क्षेत्र के साथ अंतःक्रिया जटिल और चुनौतीपूर्ण हो सकती है, जिसे ICOR गणना में सटीक रूप से शामिल किया जा सकता है।
 - परिणामस्वरूप ICOR आर्थिक विकास और पूंजी दक्षता में पूरी तरह से अनौपचारिक क्षेत्र के योगदान की भूमिका नहीं हो सकती है।
- **मूल्य विकृतियाँ:** ICOR नविश और आउटपुट के नाममात्र/नामनिल मूल्यों पर आधारित है, जो समय के साथ मूल्य परिवर्तन से प्रभावित होते हैं।
 - इसलिये **मुद्रासफीति** या **अपसफीति** नविश और आउटपुट के बीच वास्तविक संबंध को विकृत कर सकती है, जिससे ICOR के भ्रामक परिणाम सामने आ सकते हैं।
 - अतः विश्वसनीय ICOR आँकड़े प्राप्त करना डेटा की उपलब्धता और सटीकता के कारण प्रभावित हो सकता है।
- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ:** ICOR में गरिबत के बावजूद भारत बुनियादी ढाँचे की बाधाओं से जूझ रहा है।
 - इसका अर्थ यह हो सकता है कि जहाँ नए पूंजी नविश अपेक्षाकृत कुशल हैं, वहीं मौजूदा बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ समग्र आर्थिक दक्षता और उत्पादकता में बाधा बन सकती हैं।
- **क्षेत्रीय असमानताएँ:** भारत में क्षेत्रीय विविधताएँ ICOR की व्याख्या को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। घटती राष्ट्रीय ICOR असमानताओं को छुपा सकती हैं जहाँ कुछ क्षेत्र अधिक कुशल पूंजी उपयोग से लाभान्वित होते हैं, जबकि अन्य पीछे रह जाते हैं।
- **प्राकृतिक संसाधनों की कमी:** नमिन् ICOR में प्राकृतिक संसाधनों की कमी को प्रतिबिंबित करने की क्षमता नहीं है, यह दीर्घकालिक धारणीयता संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकता है।
 - प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने वाले पूंजी-प्रधान उद्योग पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हुए ICOR में गरिबत दिखा सकते हैं।

वृद्धशील पूंजी आउटपुट अनुपात (ICOR) में सुधार:

- **क्षेत्रीय और अनुभाग आधारित विश्लेषण:** मात्र राष्ट्रीय स्तर के विश्लेषण के बजाय ICOR का क्षेत्रीय और अनुभाग आधारित मूल्यांकन किये जाने की आवश्यकता है।
 - इससे एक अधिक वसिस्त समझ प्राप्त होती है कि पूंजी नविश कहाँ सबसे अधिक कुशल है और कहाँ इसमें सुधार की आवश्यकता है। इसके बाद लक्षित नीतियों को तदनुसार डिज़ाइन किया जा सकता है।
- **पारदर्शी डेटा रिकॉर्डिंग के लिये ब्लॉकचेन:** आर्थिक डेटा की पारदर्शी और छेड़छाड़-रोधी रिकॉर्डिंग सुनिश्चित करने के लिये ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करने से डेटा हेर-फेर अथवा अशुद्धियों के जोखिम को कम किया जा सकता है। इससे ICOR गणना की विश्वसनीयता में वृद्धि हो सकती है।
- **सार्वजनिक-नजी सहयोग:** पूंजी आवंटन अक्षमताओं का संयुक्त रूप से समाधान करने के लिये सार्वजनिक व नजी क्षेत्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।
 - सार्वजनिक-नजी भागीदारी की मदद से बुनियादी ढाँचे और विकास परियोजनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रलिमिस:

प्रश्न. नरिपेक्ष तथा प्रतवियक्तवास्तवकि GNP में वृद्धिआर्थकि विकास की ऊँची स्तर का संकेत नहीं करती, यदः (2018)

- (a) औद्योगकि उत्पादन कृषिउत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है ।
- (b) कृषिउत्पादन औद्योगकि उत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है ।
- (c) नरिधनता और बेरोज़गारी में वृद्धिहोती है ।
- (d) नरियात की अपेक्षा आयात तेज़ी से बढ़ता है ।

उत्तर: (c)

प्रश्न. कसि दये गए वर्ष में भारत के कुछ राज्यों में आधिकारकि गरीबी रेखाएँ अन्य राज्यों की तुलना में उच्चतर हैं क्योकः (2019)

- (a) गरीबी की दर अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होती है ।
- (b) कीमत- स्तर अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होता है ।
- (c) सकल राज्य उत्पाद अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होता है ।
- (d) सार्वजनकि वतिरण की गुणवत्ता अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होती है ।

उत्तर: (b)

मेन्सः

प्रश्न. संभाव्य सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) को परभाषति कीजये और उसके नरिधारकों की व्याख्या कीजये । वे कौन से कारक हैं जो भारत को अपनी संभाव्य जी.डी.पी. को साकार करने से रोकते हैं? (2020)

प्रश्न. भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) के वर्ष 2015 के पूरव तथा वर्ष 2015 के बाद परकिलन वधि में अंतर की व्याख्या कीजये । (2021)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/economici-nsights-beyond-gdp-icor>

